REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

''महिला बालसाहित्यकारों की रचनाओं में बाल मनोविज्ञान एवं व्यक्तित्व निर्माण''

Dr. Anita Patidar
PhD ,MPhil

सारांश —

बालसाहित्य बच्चों के सर्वांगीण विकास की एक प्रक्रिया हैं। यह बालकों के मन—मस्तिष्क को स्वस्थ बना कर उनका मनोरंजन करता हैं, साथ ही संस्कारित भी करता है और उनके भावी जीवन की बुनियाद भी रखता हैं। वस्तुत: एक तरफ बालसाहित्य जहां मनोरंजन के पल मुहैया कराता है वही बाल मनोविज्ञान व बाल मनोभाव के समावेश द्वारा सामाजिक सृजन के दायरे भी खोलता हैं। वास्तव में बच्चों की क्रियाओं, रूचियों और मनोवृत्तियों का अध्ययन करना तथा उनको सही मार्ग पर ले जाना यह कार्य बाल—मनोविज्ञान के माध्यम से ही संपन्न होता हैं। बच्चों में पढ़ने और ज्ञानार्जन करने की प्रवृत्ति ने ही बालसाहित्य को जन्म दिया हैं। इसमें उनके मन की बातें कहीं गयी होती है, जिससे कल्पना विकसित होती है, और जो भविष्य के अनेक बाल सुलभ सपनों को साकार बनाती हैं महिला बालसाहित्यकारों ने बाल—मनोविज्ञान को भली—भाँति समझा है।

KEY WORDS – बालमन, मनोविज्ञान, जीवन—मूल्य, भावनायें, जिज्ञासा, कल्पना, बचपन की अनुभूतियॉं, मासूम

प्रस्तावना —

बालसाहित्य बच्चों को उनके परिवेश, सामाजिक—सांस्कृतिक परम्पराओं, संस्कारों, जीवन—मूल्यों, आचार—विचार, और व्यवहार के प्रति सतत् चेतना जगाने में अपनी अहम भूमिका निभाता हैं। इसलिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना साहित्यकार के लिए निहायत जरूरी है। इस दृष्टि से बालसाहित्य और मनोविज्ञान दोनों का सीधा संबंध बाल मन से है। कई मनोवैज्ञानिकों मनोविज्ञान जन्म से किशोरावस्था तक के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करता हैं। एल.सी.क्रो. एण्ड ए. क्रो. ने बाल मनोविज्ञान की परिभाषा इन शब्दों में दी है—''चाइल्ड साइकोलॉजी इस सांईटिफिक स्टडी ऑफ इंडीविजुअल फ्राम हिज, प्रीनेटेल विनिंग यू द अर्ली स्टेज ऑफ हिज 'एल्डोसंट डेवलपमेन्ट''[१] इससे स्पष्ट होता है कि बालसाहित्य की रचना बालमन की आत्मीयता का रूप होता है। यह बालमनोविज्ञान की दृष्टि से बच्चों को स्वस्थ, समाज और विश्व से परिचय भी कराता हैं। बालसाहित्य बच्चे के व्यक्तित्व में डूबकर स्वयं बच्चा बनकर रचना लिखी जाती है। उसमें बच्चे की मनो—भावनायें, इच्छा—आकाक्षायें और कल्पनायें प्रति—बिम्बित होती है।

(अ) बाल मनोविज्ञान का स्वरूप —

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। उसका लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार है। मनोविज्ञान का इससे कही अधिक प्रमुख वह पहलू है जो

LBP PUBLICATION

का मानना हैं कि बाल | संतुलित, कुशाग्र बनाते हुए देश, | आत्मविकास, चरित्र—निर्माण, मानसिक आरोग्य, इन्द्रियेत्तर प्रत्यक्ष आदि से संबंधित हैं। मनोविज्ञान बच्चों के द्वारा किये गये व्यवहार का विज्ञान हैं। बालसाहित्य लेखन में बाल—मनोविज्ञान का योगदान ठीक इस प्रकार है जैसे भाषा की रचना में क्रिया का एवं शरीर की रचना में रीढ़ की हड्डी का। मनोविज्ञान का लक्ष्य विभिन्न दिशाओं में बच्चों की समस्याओं का समाधान करना हैं। यह बच्चों के कार्य—व्यवहार, मानसिक जटिलताओं तथा शक्तियों, जैसे—चेतना, स्मृति कल्पना आदि का वैज्ञानिक परीक्षण करके उनका समुचित विकास करता हैं। बाल मनोविज्ञान बच्चे के हर क्षेत्र की समस्याओं का समाधान कर देश तथा विश्व की उन्नति के लिए द्वार भी खोलता हैं। बालक क्या सोचता है, उसकी अनुभूतियाँ क्या है, यह जान पाना बहुत कठिन काम है।

बालमनों विज्ञान को जाने बिना यह संभव नहीं है, तथा यह कार्य वस्तुत: 'परकाया प्रवेश' जैसा है। बालसाहित्य की किसी भी विधा में लिखने के लिए यह निहायत जरूरी है कि रचनाकर बाल—मनोविज्ञान का कुशल पारखी हो। बालमन की बारीकियों को समझकर ही अच्छे बालसाहित्य की रचना कर सकते है। बालक का मनोविज्ञान उसकी अवस्था, पारिवारिक स्थिति, भोगौलिक स्थिति, सामाजिक परिवेश इत्यादि बिन्दुओं पर आधारित होता हैं। अत: बालमन में जीवन्त समर्पण किए बिना बाल साहित्य की सफल रचना संभव ही नहीं है। शमशेर बहादुर सिंह ने लिखा है—''बालसाहित्य लिखना दरअसल बड़ा मुश्किल काम है। इसमें आपकों कहीं न कहीं बालरूप में स्वयं को होना पड़ेगा। बच्चे के दिल में बैठकर जीवन्त रूप से समर्पण करना पेड़गा। बच्चों की साइकोलॉजी समझना उनकी भाषा उनके लहजे समझना हर किसी के वश की बात नहीं है।''[2]

प्रो. कुसुम मिश्र (डोभाल) के अनुसार—''बच्चे जितने सरल और सीधे होते है, उन्हें समझना उतना ही कठिन होता है। इसलिए बाल मनोविज्ञान समझना उतना ही आवश्यक है, जितना एक स्वस्थ समाज के लिए एक स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण।''[3] बालमन बड़ा कोमल और सरल होता है बिल्कुल फूलों जैसा। अत: बालकों के लिए लेखन करते समय बालमनोविज्ञान को समझना बहुत जरूरी होता हैं। बच्चे अपने साथ प्रेम का व्यवहार चाहते है और जहाँ से प्रेम मिलता है, वही से बटोर लेते है। उनकी भोली—भाली बातें, सपनों की दुनिया, परियों का मेला और आजकल मोबाइल मेट्रो अथा आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हैं। इस दिशा में सुप्रसिद्ध कवयित्री, कथाकार 'अंजु दुआ जैमिनी' की प्रस्तुत संग्रह की बाल कविताएँ बालमनोविज्ञान का जिंदा सबूत है। उन्होंने बच्चों के मन को भलि—भाँति जाना या समझा है तथा इन कविताओं के माध्यम से बच्चों को अच्छी बातें सीखायी हैं। इनमें—चाँद, तारे, प्रकृति, पर्यावरण, तितली, विद्यालय, प्यारी टीचर, टॉफी, नींद, मोबाइल, मेट्रो, वतन, तोता, आदि कविताओं के माध्यम से बच्चों का मनोरंजन किया गया हैं। अंजु दुआ जैमिनी की एक कविता है — 'प्रकृति की बारात' जिसमें बच्चों को प्रकृति की सभी जीव—जन्तु, पर्वत—शिखाएँ, चाँद—तारे आदि का परिचय करवाया हैं।

प्रकृति की बारात—

''चिड़ियों से चहचहाना सीखो, भौरों से गुनगुनाना सीखो
हरे—भरे बाग—बगीचे, फूलों से महकाना सीखो
नील गगन की विशालता से, सबको गले लगाना सीखों।''[4]
''बिना मोल सब देना सीखो, सूरज—चाँद—सितारे न्यारे
दूर भगाते जग के अंधियारे,इनकी सह्रदयता की नहीं मिसाल
रोशनी इनसें फेलाना सीखो, कंक्रीट के जंगल जहाँ—तहाँ
नंगी—बुची धरती रोती, न काटो इन वृक्षों को
सान्निध्य में इनके मुस्कुराना सीखो''[5]

कवियत्री ने कविता में अपनी सम्पूर्णता से बालमन की समझ की उत्कृष्ट रचना हैं। जिसमें बालमन में जो भाव जागते है किसी चीज को देखकर उन सब का वर्णन किया है। इस तरह बच्चे नए शब्द भी सीखते है और प्रकृति से प्यार भी करते है। आज बच्चे अपने आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते है। इस पुस्तक की सभी रचनाएं बालमनोविज्ञान को समझकर लिखी गई है, जिससे बच्चे नए

शब्द भी सीखेंगे और उनकी हिन्दी शब्दावली भी मजबूत होगी। सुप्रसिद्ध कवयित्री अंजु दुआ जैमिनी की प्रस्तुत संग्रह की बाल कविताएँ उनके बाल मनोविज्ञान का जिंदा सबूत है।

बच्चे जितने सीधे और सरल होते है उन्हें समझना उतना ही कठिन होता हैं। महिला बालसाहित्यकारों ने न रंगो को देखा, न शक्लों को उन्होंने तो सिर्फ बच्चों की बेचैनी पर तथा उनके द्वारा किये गये कार्य को देखा और बालसाहित्य की रचना की। बालसाहित्य की किसी भी विधा का लेखन हो यह जरूरी होता है कि रचनाकार बाल—मनोविज्ञान को भालि—भाँति समझे। बिना बच्चा बने बच्चों के अन्तर्मन को नहीं समझ सकते तथा बाल—मनोविज्ञान की बारीक पड़ताल के बिना लिखा हुआ बालसाहित्य अच्छा नहीं होता है। महिला बालसाहित्यकारों की रचनाओं में बाल मनोवृत्तियाँ, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता एवं उद्वेग का भरपूर समावेश किया हैं।

मालती बसंत बाल मनोविज्ञान की ज्ञाता है। वे बालमन की भावना, संवेदना, अनुभूति, कल्पना सब कुछ उनकी रचनाओं में सहज व सशक्त ढंग से मुखरित हुआ हैं। छोटे बच्चों के मन में संसार के प्रति सहज कौतुहल का भाव होता है और यह भाव मनोरंजन के द्वारा ही संभव है। 'माँ—की कहानी' संग्रह में बालमनोविज्ञान को समझाते हुए कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। इन छोटी—छोटी सात कहानियों में बच्चों के मनोभावों को जाग्रत किया गया हैं। इनके विषय— माँ भी तो इंसान है, तलाश, माँ सिर्फ माँ, माँ का महत्व, दर्द की दवा, बुढ़ापे का सहारा, अनुभव आदि हैं। माँ सिर्फ माँ, कहानी में सुमि सौतेली माँ को सहन नहीं करती और बीमार हो जाती है। बीमारी में सौतेली माँ उसकी अपनी माँ की तरह देखभाल करती है जिससे सुमि का ह्रदय परिवर्तन हो जाता है और उसे वह नई अपनी माँ मान लेती है—''उनकी आँखों से अपने प्रति मुझे वात्सल्य ही दिखायी देता। पता नहीं क्यों अब उनका साँवला रंग भी मुझे अच्छा लगने लगा था। कहीं इनमें मेरी माँ की आत्मा तो नहीं प्रवेश कर गयी ?''[६] ''मुझे महसूस हो रहा था माँ सिर्फ माँ होती है''[७]

इन बाल कहानियों का मुख्य उद्देश्य है बच्चों को मनोरंजन के साथ ही नैतिक शिक्षा व ज्ञानवर्धन करना है। ''ये कहानियाँ बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए उनकी स्वाभाविक मनोवृत्तियों को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि उन्हें नई दिशा और सही राह दिखाने का प्रयास भी करती है। 'एक सही राह' में आत्मविश्वासी बनने 'परिवर्तन' कहानी में स्वाभाविक ईर्ष्या की मनोवृत्ति से उबरने, बोलते पत्थर, में करूणा और परोपकार की सीख देना लेखिका का प्रयास रहा है।''[८]

डॉ. सरस्वती बाली की ३ पुस्तकों का संग्रह है, जिनमें अलग—अलग उम्र के बच्चों के लिए उपयोगी हैं। प्रस्तुत संग्रह की कहानियों के माध्यम से बच्चों का भरपूर मनोरंजन होता है। इन कहानियों की विशेषता यह हैं कि इनमें बच्चों को सीधा उपदेश न देकर बालपात्रों के माध्यम से उन्हें ऐसी स्थिति में डाला गया हैं, जिससे वे जीवन में अपना दायित्व एवं नैतिक मूल्यों को समझ सकें तथा सही दिशा मिल सके। लेखिका की दृष्टि से मानवीय मूल्यों के बीच बालक के अवचेतन में बचपन से रोपित करने जैसी प्रक्रिया है ताकि वे उसके संस्कार बन सकें। 'नई राह' कहानी किशोरो द्वारा ऐसी राह का चयन है, जो नशे की लत में भटके लोगों को दिशा प्रदान करती है। इसी प्रकार 'सरप्राइज पार्टी' वृद्धों के प्रति सम्मान जगाती है। गोद कहानी सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित बच्चों को अपनाने का आदर्श रखती हैं। प्रतिज्ञा कहानी का बालनायक वृद्धाश्रम में जाकर वृद्धों की सेवा करता है और उनके साथ भावनात्मक रिश्ता कायम कर उनमें जीने की उमंग पैदा करता हैं। ''निरक्षर लोगों को मुफ्त में शिक्षित करना देश की सेवा है। देश सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं होती।''[९]

'विद्या बांटने से घटती नहीं, बल्कि बढ़ती है जो कुछ तुम्हें आता है वह जब तुम दूसरे को बताओंगे तो उस विषय की तुम्हारी अपनी समस्याएँ भी खुद—ब—खुद सुलझ जायेंगी।'[१०]

''मन में देश और समाज के हित की भावना हो, तो मुश्किले दूर हो जाती है और काम करने की आदत पड़ जाती है। फिर सारा काम आसान लगने लगता है।''[११] डॉ. सरस्वती बाली की तीनों पुस्तकों में सरल भाषा और रोचक शैली में लिखी इन कहानियों को पढ़कर बच्चे अपने भीतर के सद्गुणों से साक्षात्कार होंगे क्योंकि बच्चे अपनी छोटी सी जीवन यात्रा में ऐसी बहुत सी गलतियाँ करते हैं, जो उन्हें नहीं करनी चाहिए और बाद में उस गलती पर पश्चाताप भी करते हैं। ''हाय मैंने कितने ही गलत काम किये, कितने झूठ बोले उन सबका बुरा फल मुझे अपने आप मिल गया। मैंने बडो का अनादर

किया, टीचरों को बेवकूफ बनाया। हे भगवान मुझे क्षमा कर दो। मैं आगे से ऐसा काम नहीं करूंगी। ४मस ब मन कहकर मीता बहुत रोई।''[१२]

शिवानी चतुर्वेदी की 'वन्य जीवों की रोमांचक कहानियाँ' एवं 'टिमटिम' नामक पुस्तकों में पशु—पक्षियों एवं जंगली जानवरों की रहस्यमय कहानियाँ हैं, जिसमें कहीं मोर, कहीं साँप, कहीं चिता, हिरन, तो कहीं हाथी सभी तरह के जानवर अपना मत व विचार प्रकट करने के लिए स्वतंत्र हैं। इनके विषय —कुहु कोयल के गीत, आत्मविश्वास और मित्रता की जीत, प्लेनक्टोन की खीर, गोलू की ईमानदारी, बाबूजी का सुन्दर घर, भगवान का वरदान, बगीचे का मित्र, शरारती चिंटू, आत्मबल की पहचान, परोपकारी कोको, अनोखी मित्रता आदि कहानियों के माध्यम से बच्चों का आत्मबल के साथ ही उनका मार्गदर्शन भी करती हैं।

बालमनोविज्ञान को समझने की क्षमता महिला बालसाहित्यकारों को हैं क्योंकि बालसाहित्य बालमनोविज्ञान का ही परिणाम है। यदि बालमनोविज्ञान न होता तो बालसाहित्य का जन्म ही नहीं होता। बालमनोविज्ञान की रचनाओं के द्वारा बच्चों का विकास अधिक तीव्रता से होता हैं। बालमनोविज्ञान की आधार भूमि रहित कोई भी साहित्य विधा बच्चों के लिए उपयोगी व प्रभावकारी नहीं होती हैं क्योंकि जो बच्चों को अच्छी नहीं लगती वह रचना वे पढ़ते भी नहीं है। महिला बालसाहित्यकारों ने बालसाहित्य के महत्व को स्वीकार कर वे ही रचनाएँ लिखी जो बच्चों के लिए हितकर हो तथा जिसका प्रभाव तुरन्त ही हो। आज लेखिकाओं ने बच्चों के लिए एसी रचनाएँ लिखी है जो शाश्वत सत्य पर आधारित हो जिसे पढ़कर बच्चे क्षेत्र, प्रदेश के नहीं, बल्कि देश की पहचान बन सके। इसी कारण लेखिकाओं ने बच्चों को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रभावित किया है। उनकी पठन रूचि जाग्रत कर उन्हें अधिकाधिक अध्ययन प्रिय बनाने की ओर प्रेरित भी किया है।

(ब) व्यक्तित्व निर्माण संबंधी रचनाएँ —

बच्चों के व्यक्तित्व—निर्माण में महिला साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि माँ के गर्भ में सुनी कहानी ने अभिमन्यु को चक्रव्यूह प्रवेश सिखाया था। बच्चा गीली मिट्टी की तरह होता है, उसे जैसा रूप देना चाहे, दे सकते है, वह एक कोरी स्लेट होता है जैसी इबारत लिख दो। यह इबारत ही उसके व्यक्तित्व निर्माण में सहायता कहती है। यह नींव जैसा है जिस पर आगे का संपूर्ण जीवन निर्भर रहता है। यह जीवन—मूल्यों और संस्कारों के बीजारोपण का कार्यकर्ता हैं। आज बच्चों को वही बालसाहित्य देना चाहिए जो आधुनिक परिवेश से जुड़ा हुआ हो। बालसाहित्य की प्रेरक रचनाएँ बच्चों में साहस, करूणा, प्रेम, दया और सामाजिक समरसता के साथ ही राष्ट्रीयता की भावना भी जाग्रत करेगा।

डॉ. शकुन्तला कालरा ने जीवन मूल्य आधारित बालसाहित्य में स्पष्ट किया है कि—जीवन मूल्यपरक साहित्य लेखन मानवीय मूल्यों के बीज बालक के अवचेतन में बचपन से ही रोपित करने जैसी प्रक्रिया हैं, ताकि वे मानवीय मूल्य उसके स्वभाव का अंग व उसके आदर्श बन जाएं और उसे आजीवन प्रेरित कर उसका मार्ग—दर्शन करते रहें।''[१३]

महिला बाल साहित्यकारों का लक्ष्य हैं कि बच्चों को एक आदर्श नागरिक बनाया जाय। उन्होंने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तर दायित्व का बोध कराने वाला बालसाहित्य बच्चों को परोसा जाय। जिससे बच्चों के भीतर, साहस, पराक्रम, नैतिक बल, स्वावलंबन, चरित्र—निर्माण, देशभक्ति, सेवाभाव, आत्मरक्षा, ईमानदारी और सत्य निष्ठा आदि गुणों से युक्त बालसाहित्य बच्चों के लिए लिखा हैं। महिला बाल साहित्यकारों का बालसाहित्य उपदेशात्मक ही नहीं हैं, बल्कि स्वाभाविक रूप में तार्किक शक्ति, बुद्धि, विवेकशीलता और चारित्रिक दृढ़ता को पैदा करने वालाहैं। बच्चों की अवस्था के साथ—साथ उनकी कल्पना शक्ति का भी विकास होता हैं। बालसाहित्य की रचनाएं चरित्र—निर्माण का कार्य बड़ी कुशलता से संभालती हैं। कुछ क्षण इन रचनाओं के साथ गुजारना, सोचना, मनन करना व्यक्तित्व को पहचाने में सहायता करता हैं। अत: बालसाहित्य केसृजन में महिलाओं ने इसका विशेष ध्यान रखा है, क्योंकि बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में ही देश, समाज और राष्ट्र का भविष्य निर्भर होता हैं। महिला बालसाहित्यकारों का प्रमुख उद्देश्य रहा हैं कि बच्चों में व्यक्तित्व निर्माण संबंधी रचनाएँ देकर उन्हें मुसीबतों से लड़ने की प्रेरणा देना तथा आगे की ओर बढ़ते चलना सिखलाया है।

आज हिन्दी बालसाहित्य में विविध विषयों के द्वारा महिला बाल साहित्यकारों ने बच्चों को कल्पना की ऊंची उड़ान दी हैं और आधुनिक युगबोध की धरती भी तथा विज्ञान की अति आधुनिक जानकारी देकर वे बालजीवन को यथार्थ के परिवेश से जोड़ती है साथ मनोरंजन भी करती है। आज आवश्यकता है ऐसे बालसाहित्य की जो बच्चों के मानसिक तुष्टि—मनोरंजक और बौद्धिक दोनों रूप में मनोवैज्ञानिक ढंग से हो। साहित्यकार का लक्ष्य बच्चों के व्यक्तित्व की रचना करना होता हैं तथा बच्चा कहानी या कोई भी विधा के माध्यम से अपने जीवन के सुख—दु:ख, हर्ष—विवाद और समस्याओं का समाधान करता हैं। बच्चे को सुसंस्कृत करने के लिए जितने उपयोगी मार्ग है उनमें साहित्य, सरल एवं उत्कृष्ट साधन है। ''बचपन के सबक यानी सुदृढ़ नींव मजबूत इमारत''।

''बचपन जिदंगी का सबसे खूबसूरत समय। मासूम, अल्हड़ और स्वच्छंद। मौज—मस्ती, खेलकूद और अपनी अलग ही दुनिया, जहाँ न कोई चिंता है, न कोई बोझ। पर क्या कभी हमने सोचा है कि जितना खूबसूरत ये समय है, उतना ही संवेदनशील भी है। इस उम्र में सीखी गई हर गलत—सही बाल ताउम्र हमारे साथ चलती है।''[१४]

डॉ. मधुभारतीय ने बच्चों के लिए बालगीत, बाल कहानी एवं मुक्त छंद में कविताएं लिखी हैं। जो प्रतिष्ठित पत्र—पत्रिकाओं में, एक दूरदर्शन व आकाशवाणी से भी प्रसारित हुई है। इन्होंने बाल मनोविज्ञान को भली—भाँति समझा और जाना है। उनकी रचनाओं में ज्ञानवर्धन के साथ व्यक्तित्व विकास के भी बीज छिपे हुए हैं। प्रकृति, जीव—जन्तु, घर, गाँव, मेले, उत्सव, तीज—त्यौहार सभी का सुन्दर चित्रण इनकी रचनाओं में मिलता हैं। मधु भारतीय की रचनाओं में भाषा का नवीन प्रयोग मिलता हैं। अनपढ़ बन्दर, चिड़िया फुर्र उड़ी, ५मस ब एक है, मेरा देश महान, साहसी टिल्लू, गाने वाले फूल, गीतो की रंगोली, शिशुओं के मनभाए गीत, गीतों की फुलवारी, आओ मिलकर गाएं गीत, कवि सम्मेलन जंगल में, आदि जैसे कविता व गीत संग्रह मधु भारतीय की प्रतिभा के परिचायक हैं। इन रचनाओं में बच्चों की सरल व मनोरंजक दुनिया के बड़े ही लुभावने चित्र मिलते हैं।

''मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, पिताजी, आपके सपने को साकार करूँगा और बहुत बड़ा वैज्ञानिक बनूँगा। आपने ही तो सिखाया था कि जीतेजी हार नहीं माननी चाहिए।''[१५] डॉ. भारतीय की एक छोटी सी कहानी में अनुराग गोयल को संगीत का बहुत शौक था। उसकी प्रबल इच्छा थी ५मस ब राष्ट्रीय स्तर की संगीत प्रतियोगिता में विजयी हो और राष्ट्रीय स्तर का गायक बने। लेकिन उसकी एक हार से प्रथम आने का सपना धराशायी हो गया। लेकिन उसने हार नही मानी । ''अरे, असफलता ही सफलता की सीढ़ी है।'' एक नई चेतना, नए उत्साह, नई उमंग और नई ऊर्जा के साथ आनन्दमयी मुद्रा में अनुराग गोयल गुनगुनाता हुआ घर की ओर चल दिया।''[१५]

इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने बच्चों को जीवन में हमेशा प्रयास करने की व आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

बच्चें की पहली पाठशाला उसका घर—परिवार होता है उसमें भी 'माँ' की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। अगर माता—पिता बच्चों की छोटी सी छोटी बातों पर ध्यान देते हैं प्रत्येक कार्य में रूचि लेते है उसकी इच्छाओं का सम्मान करते है, तो बालक में सहयोग, सद्‌भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास होगा और वह समाज के संगठन में सहायता कर एक सफल नागरिक बन सकेगा। डॉ. शकुंतला कालरा की पुस्तक 'बच्चों का व्यक्तित्व विकास कैसे हो? में तमाम बिन्दुओं पर ध्यान दिया गया हैं जिससे बच्चों को सही मार्ग मिल सकें। इनके विषय—बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में माता—पिता का योगदान, व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की भूमिका, व्यक्तित्व विकास में सर्वाधिक बाधक: मानसिक तनाव, बच्चों में निराशा न आने दें, बालकों के चहुँमुखी विकास में खेलों की भूमिका, बच्चों के व्यक्तित्व—निर्माण में 'स्व' की भूमिका, बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में बालसाहित्य और बालसाहित्यकारों की भूमिका, व्यक्तित्व विकास में मित्रों और संगी साथियों की भूमिका, आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं। ये सभी मिलकर बच्चों को सही दिशा दे सकते हैं। ''बालकों के व्यक्तित्व—निर्माण में बालसाहित्य और बालसाहित्यकार की भूमिका..........''कथा—कहानियाँ, कविता, गीत, चुटकुले, पहेलियाँ आदि विविध विधाओं में लिखा बालसाहित्य बाल—चिंतन की उदात भावनाओं और आकांक्षाओं का जीवनदायी स्त्रोत हैं। शब्दों के माध्यम से बच्चा सोचना सीखता है। सजीव कहानियाँ बच्चों की चेतना और भावनाओं पर छा जाती हैं। इसके

बिना बाल—चिंतन और बालवाणी की कल्पना भी नहीं की जा सकती। बच्चों को इस बात से गहरा संतोष मिलता हैं कि उनके विचार कथा—कहानियों के संसार में रहते हैं। इसलिए तो दादा—दादी, नाना—नानी की गोद में बैठकर कहानी सुनना उन्हें बहुत अच्छा लगता हैं। किन्तु आज नगरों, महानगरों में खुले बोर्डिंग और पब्लिक स्कूलों ने बचपन को बेडियों में कैद कर लिया है, जहाँ रटाई गई कविता जिसका वे अर्थ भी नहीं समझते है, सीखने के लिए मजबूर होते है।''[१६]

''बच्चों में निराशा न आने दें''

''ईश्वर की पूरी सृष्टि आनन्द में है। प्रातः काल मुस्काता सूर्य, शीतल सुगंधित वायु, कल—कल करती नदियाँ, झूमते—इठलाते पेड़, उन पर बैठे पक्षियों का सुमधुर कलरव सभी तो आनंद की मस्ती में रंगे हैं फिर मनुष्य क्यों निराशा से बेरंग हो रहा है। निराशा एक विषैला सर्प है। जो बच्चे के आनंदमय जीवन को डस कर विषैला बना देता है। ऐसे बच्चों का चहुँमुखी विकास अवरूद्ध हो जाता हैं। वे कभी विजयी नहीं हो पाते। विजय तो दूर की बात है वे दौड़ में भी भाग नहीं लेते। अनिष्ट की कल्पनाएँ उन्हें भयभीत करती हैं।''[१७]

अतः डॉ. शकुंतला कालरा स्वयं बाल साहित्यकार, शिक्षिका एवं ममतामयी माँ होने के नाते बच्चों के व्यक्तित्व विकास से तीनो स्तरों से सीधे जुड़ी है। इसलिए ६मस ब६खन में बालकों के चरित्र विकास के संबंध में सैद्धांतिक या हवाई बातें नहीं है, अपितु वर्तमान यथार्थ से सीधी जुड़ी बातें हैं, समस्याओं के व्यवहारिक समाधान सुझाए गए हैं। लेखिका का लंबा अनुभव और साहित्यिक लेखन क्षमता उनके बाल मनोविज्ञान विषयक निबंधों को आज के माता पिता शिक्षक और बालसाहित्यकार सबके लिए समान रूप से उपयोगी तथा सार्थक हैं।''

डॉ. सरोजिनी अग्रवाल की 'गुडिया गाए गीत, मेरे गीत तुम्हारे बोल, शीला हँसते गाते बालगीत, बोल बेबी बोल, गीतों की बगिया, चील नानी की बुद्धिमानी, रोबोट मास्टर नामक पुस्तकों में नन्हें—मुन्नो के मनोरंजन व मनोवैज्ञानिक विकास में इन बालगीतों का महत्वपूर्ण स्गन हैं। इनकी भाषा सरल, सरस व संगीतमय हैं। सरोजिनी अग्रवाल ने इन संकलनों में काल्पनिक दुनिया है, नाटकीयता है, संगीतात्मकता है साथ ही बच्चों का भोलापन स्पष्ट रूप से छलकता है। हँसते गाते बालगीत में अनेक छोटे—छोटे बालगीतों का संग्रह किया गया है। जिसमें बच्चों का व्यक्तित्व विकास छिपा हैं।

'जंगल में मोर'

नाच रहा जंगल में मोर, बादल देख मचाये शोर
रंग बिरंगे सुन्दर पंख, जैसे सजे सजाए शंख।''[१८]

'समय पर काम'

'जल्दी उठकर रोज सवेरे, पढूँ नहीं दंगल करता।
करता सारा काम समय पर, इसीलिए अव्वल रहता।[१९]

'प्यारा भारत देश'

'भारत मेरा प्यारा देश, धोती कुर्ता मेरा वेश।
मैं गांधी का नाती हूँ, सच्चाई से प्यार विशेष।''[२०]

'हम छोटे बालक'

छोटे—छोटे बालक है हम, भगवान जग के पालक हो तुम।
हमें बुद्धि बल दया ज्ञान दो, मीठी वाणी आनमान दो।''[२१]

डॉ. सरोजिनी अग्रवाल मूलतः एक सुप्रसिद्ध लेखिका है। उन्होंने कहानी कविता, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत आदि की रचनाओं में सहज मर्मानुभूति हैं, जो बच्चों के व्यक्तित्व विकास में

सहायक है। अग्रवाल जी एक साहित्यकार के साथ–साथ एकसमाज सेविका भी है। ये बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर किया गया, सृजन बालरूचि कर है। अत: इन्होंने बालोपयोगी विषयों पर प्रत्येक आयु वर्ग के बालकों के लिए कविता व अन्य विधाएँ लिखी है। ये बालस्वभाव की पारखी लेखिका है।

डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री की पुस्तक 'सतरंगी बौने' में ६ कहानियाँ हैं जो शिक्षाप्रद है। इन्होंने बच्चों को समय की कीमत, घर का चिराग, अन्तिम भूल, अपना हाथ जन्ननाथ, सतरंगी बौने, आदि कहानियों के द्वारा व्यक्तित्व विकास के साथ ही एक सही दिशा निर्देश भी दिया हैं ! सतरंगी बौने की कहानी सात राजकुमारों की है जो आलस के कारण बौने बन जाते है। ''कुछ समय पहले हम सातों राजकुमार श्रम, ईमानदारी, आत्म–निर्भरता, सेवा, मौन, कर्तव्य और शांति के प्रतीक बनकर राजमहल में बहुत अच्छी तरह से रहते थे। एक बार देश में एक आलसी राजकुमारी आ गई। ७मस ब उससे प्रेम करने लगे। हमारे माता–पिता ने बहुत समझाया, पर हमने उनकी एक नसुनी। इस पर उन्होंने हमें श्राप दिया कि तुम सब बौने बन कर यहां पड़े रहो। जब हमने हाथ–पैर जोड़े तो उन्होंने कहा.........जब कोई बालक घमंड, शेखी और आलस का त्याग कर तुम्हारी सेवा करेगा, तुम्हारा उद्धार हो जायेगा।'' तुमने हमारा उद्धार किया। हम तुम्हारे आभारी हैं और तुम्हें पिता के पास पहुंचा देंगे।''[८५]'जो बच्चे बड़ों की बात मानते हैं व नेक काम करते हैं, उनके बुरे दिन सुख में बदल जाते है।'[८६] 'मुझे विश्वास था कि मेरी सच्ची मित्रता तुम्हें भी सच्चा मित्र बना देगी। तुमने गलती मान ही ली है पर मैं तो तुमकों ढूंढने बहुत पहले ही निकल गई थी। देखों मीठे फल मैंने तुम्हारे बिना, चखे भी नहीं।''[२२]

निष्कर्ष –

विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के सर्वांगीण विकास में उपयोगी सिद्ध होगी। ये कहानियाँ विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी देती है साथ ही निरडरता, आपसी सहयोग, दोस्ती, उदारता, परोपकार, एकाग्रता एवं विचारों की अभिव्यक्ति जैसे गुणों का विकास भी करती हैं ! बच्चों के लिए बालसाहित्य वह कार्य करता हैं जो माता–पिता भी नहीं कर पाते। बालसाहित्य बच्चों के भीतर के संस्कारों को न केवल मजबूत करता है तथा संस्कारों को सींचता व रोपता भी है तथा पौध रूप को अंकुरित भी करता है बालसाहित्य बच्चे के विकास, चरित्र, आचरण, व्यवहार, विचार, स्वभाव कार्य आदि को प्रभावित करता हैं। अत: बच्चों को आरंभ से ही बालसाहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाये, जो उन्हें संस्कारवान बनाए। जिससे उन्हें सद्नागरिक बनने की प्रेरणा मिले। आज एक अच्छा बालसाहित्य बच्चों को सही दिशा सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

१. एल. सी. क्रो. एण्ड ए.क्रो. चाइल्ड साइकोलॉंजी, पृ.सं. १
२. नवभारत टाइम्स –रविवारवार्ता (नई दिल्ली) १७/११/९१ पृ.सं. २
३. कश्क, डॉ. विनोद कुमार तनेजा, नवम्बर २००८, पृ सं. १
४,५ मिट्ठू की मिट्ठी और बाल कविताएँ, अंजु दुआ जैमिनी, पृ.सं. ४५
६,७. माँ की कहानी, मालती बसंत, पृ.सं. २७
८. बालसाहित्य समीक्षा, वर्ष, २७ अंक १ अक्टुबर २००४, पृ.सं. १७
९. खुशी के पल, डॉ. सरस्वती बाली, पृ.सं. २२ (नया रास्ता)
१०. दीवान मूलराज का न्याय, डॉ. सरस्वती बाली, पृ.सं. ४० (नया फार्मूला)
११. टिम–टिमतारे–डॉ. सरस्वती बाली, नई राह, पृ.सं. ४५
१२. दीवान मूलराज का न्याय, डॉ. सरस्वती बाली, पृ.सं. ३०
१३. जीवन मूल्य आधारित बाल साहित्य लेखन, पृ.सं. २४ (डॉ. शंकुलता कालरा)
१४. नई दुनिया, नायिका, २० जुलाई २०११, बुधवार, पृ.सं. २
१५. समुद्र बने बूंद–बूंद से, डॉ. मधु भारतीय, पृ.सं. १६
१६. समुद्र बने बूंद–बूंद से, डॉ. मधु भारतीय, पृ.सं. ३२

LBP PUBLICATION

१७. बच्चों का व्यक्तित्व विकास कैसे हो ? डॉ. शंकुतला कालरा, पृ.सं. ८५
१८,१९,२० हँसते गाते बालगीत, सरोजिनी अग्रवाल, पृ.सं. ६,१४,१६
२१. मेरे गीत तुम्हारे बोल, सरोजिनी अग्रवाल, पृ.सं. ११
२२. सुनहरा सवार, डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. ३२

LBP PUBLICATION